वर्ष- 2, अंक - 5, मई - 2018
जे-7, श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.)
आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

प्यारे बच्चों,

परीक्षाएं समाप्त हो चुकीं और आप सब छुट्टियों का मज़ा ले रहे हैं. बहुत से बच्चे छट्टी में नानी-दादी के घर भी गए होंगे जहां आप सबको अच्छी-अच्छी कहानियां सुनने को मिल रही होंगी. यह समय खेलने और घूमने फिरने का है. गर्मियों में घर से बाहर जाने के पहले खूब सारा पानी पीना न भूलना. खेलने से साथ अपना ज्ञान बढ़ाने के लिये अच्छी पुस्तकें पढ़ना भी न भूलना. जल्दी ही स्कूल फिर खुलने वाले हैं. सभी बच्चों की तरह आपको भी नई स्कूल यूनीफार्म पहनकर स्कूल जाने का चाव होगा. स्कूल के पहले दिन के अपने अनुभव हमें लिख भेजना. आपके अनुभव हम प्रकाशित करेंगे. अधूरी कहानी और चित्र कहानी के लिये तो आपकी रचनाएं हमें चाहिये ही, साथ ही विज्ञान के खेल, कला, संस्मरण, सामान्य ज्ञान, गीत, कविता चुटकुले और पहेलियां भी किलोल के लिये dr.alokshukla@gmail.com पर ई-मेल व्दारा भेजते रहिये. हमेशा की तरह यह अंक भी http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है. सभी बच्चों को मेरा प्यार.

आलोक शुक्ला

आदत से लाचार

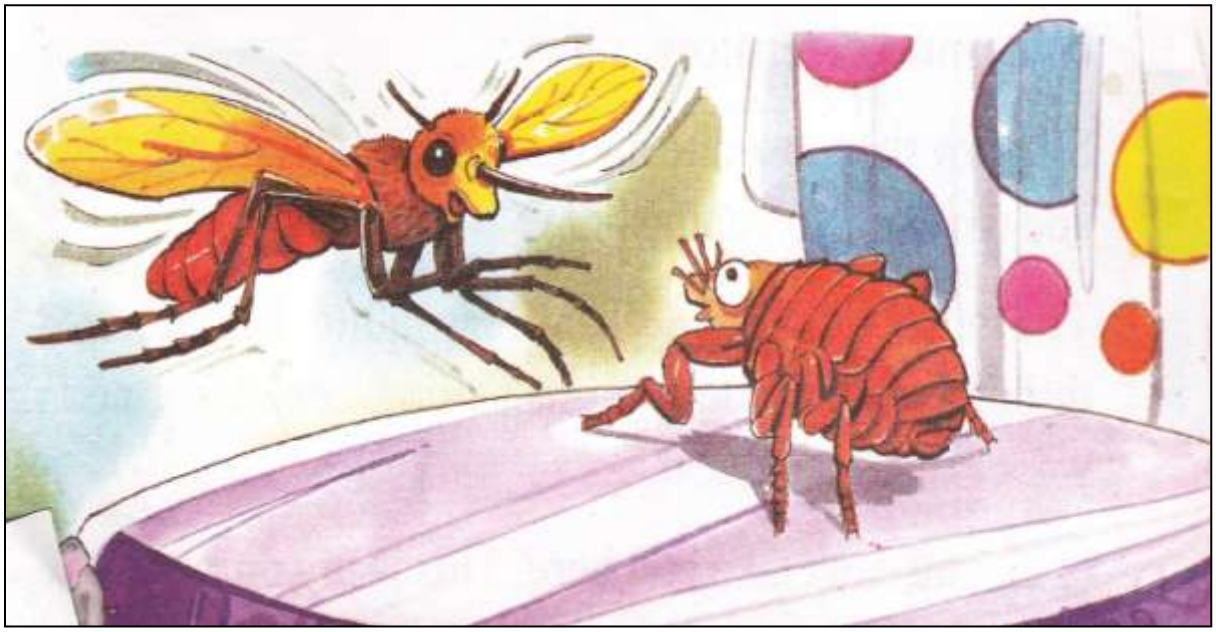

तुगलकनगर में एक राजा राज करता था। उसके भवन के शयनकक्ष में एक खटमल रहता था. वह नियमित रुप से राजा का रक्तपान कर सुखपूर्वक जीवन-यापन करता था. एक दिन कहीं से एक मच्छर राजा के शयनकक्ष में आ गया. मच्छर को देखकर खटमल ने कहा - "मैं यहाँ कई बरसों से रह रहा हूँ. राजा के इस शयनकक्ष पर सिर्फ मेरा अधिकार है". मैं तुम्हें यहाँ रहने की अनुमति नहीं दे सकता. तुम तुरंत चले जाओ. मच्छर ने खटमल को समझाते हुए कहा - "घर आये अतिथि की इस प्रकार उपेक्षा नहीं करनी चाहिए. मेरा तो यहाँ आने का सिर्फ एक ही प्रयोजन है. वह प्रयोजन पूरा होते ही मैं यहाँ से चला जाऊँगा. बस मुझे दो- तीन दिन रहने की अनुमति दे दो." खटमल ने उसके आने का प्रयोजन पूछा. मच्छर ने समझाते हुए कहा - "मैंने अनेक प्रकार के मनुष्यों का रक्त का पान किया है. सभी के रक्त कड़वे, खट्टे तथा कसैले थे. आज तक मैंने अच्छे खान-दान वाले राजा के रक्त का सेवन नहीं किया है. मेरी वर्षों से मनोकामना है कि मैं भी

कभी इस अवसर का लाभ उठा पाऊँ. मुझे सिर्फ दो- तीन दिन यहाँ अपने साथ रहने की अनुमति दे दो.''

इस प्रकार मच्छर ने खटमल को अपने विश्वास में ले लिया. खटमल ने शर्त रखी कि उसे राजा के निद्रामग्न होने तक धैर्य धारण करना होगा. मच्छर ने सहमति जताते हुए कहा - ''जब तक तुम राजा का खून चूस न लोगे, तब तक मैं धैर्य धारण किए हुए तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा.'' रात में राजा अपने शयनकक्ष में आकर लेटा तो मच्छर अपने पर काबू नहीं रख पाया. उसका धैर्य खत्म होता गया. वह राजा के जागते में ही उसका रक्त चूसने लगा. शरीर में चुभन से बेचैन राजा चिल्लाकर उठ खड़ा हुआ. महाराज की आवाज को सुनकर बाहर खड़े सेवक शयनकक्ष में आ पहुँचे तथा बिस्तर की बारीकी से छान-बीन करने लगे. मच्छर तो बाहर उड़ गया लेकिन नौकरों की नज़र छिपकर बैठे खटमल पर पड़ गयी. उन्होंने खटमल को मार डाला.

कथा सार - किसी भी प्राणी का स्वभाव बदलना बहुत मुश्किल काम है. किसी को भी शरण देने के पहले अच्छी तरह सोच- विचार कर लेना चाहिए.

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने एक अधूरी कहानी प्रकाशित की थी और आपसे उस कहानी को पूरा करने का अनुरोध किया था. वह अधूरी कहानी हम नीचे दे रहे हैं -

अधूरी कहानी - घमंडी हाथी और चींटी

एक समय की बात है चन्दन वन में एक शक्तिशाली हाथी रहता था. उस हाथी को अपने बल पर बहुत घमंड था. वह रास्ते से आते जाते सभी प्राणियों को डराता धमकाता और वन के पेड़-पौधों को बिना वजह नष्ट करता उधम मचाता रहता. एक दिन आकाश में बिजली चमकी और मूसलाधार बारिश होने लगी. तेज़ बारिश से बचने के लिए हाथी दौड़ कर एक बड़ी गुफा में जा छिपा. गुफा के भीतर एक छोटी सी छीटी भी थी. उसे देखते ही हाथी हँसने लगा और बोला - "तुम कितनी छोटी हो, तुम्हे तो मैं एक फूंक मारूँगा तो चाँद पर पहुँच जाओगी. मुझे देखो मैं चाहूँ तो पूरे पर्वत को हिला दूँ. तुम्हारा जीवन तो व्यर्थ है."

अनेक बच्चों ने यह कहानी पूरी करके भेजी है. उनमें से कुछ हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं.

एक

लेखिका सतरूपा पाल, गड़रियापारा, लाखासर

हाथी को चींटियों से बड़ी ईर्ष्या होती थी. वो उन्हें जब भी देखता, तो पैरों से कुचल देता. चींटी ने हाथी से विनम्रता से पूछा कि आप दूसरों को क्यों परेशान करते हो? यह आदत अच्छी नहीं है. यह सुनकर हाथी क्रोधित हो गया और उसने चींटी को धमकाया - ''तुम अभी बहुत छोटी हो, अपनी ज़ुबान पर लगाम लगाकर रखो, मुझे मत सिखाओ कि क्या सही है, क्या ग़लत वरना तुम्हें भी कुचल दूंगा.'' यह सुन चींटी निराश हुई, लेकिन उसने मन ही मन हाथी को सब सिखाने की ठानी और मौक़ा देखते ही चुपके से हाथी की सूंड़ में घुस गई. फिर उसने हाथी को काटना शुरु कर दिया. हाथी परेशान हो उठा. उसने सूंड़ को ज़ोर-ज़ोर से हिलाया, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ. हाथी दर्द से कराहने और रोने लगा. यह देख चींटी ने कहा - ''हाथी भइया, आप दूसरों को परेशान करते हो, तो बड़ा मज़ा लेते हो. अब ख़ुद क्यों परेशान हो रहे हो?'' हाथी को अपनी ग़लती का एहसास हो गया. उसने चींटी से माफ़ी मांगी कि और कहा कि आगे से वो कभी किसी को नहीं सताएगा. चींटी को उस पर दया आ गई. वो बाहर आकर बोली कि कभी किसी को छोटा और कमज़ोर नहीं समझना चाहिए.

सीख: घमंडी का सिर सदा नीचे होता है. कभी किसी को कमज़ोर और छोटा न समझें. दूसरों के दर्द व तकलीफ़ को समझना ही जीने का सही तरीक़ा है.

दो

लेखक - हिमांशु मधुकर, सलोरा

हाथी बोला- ‘‘भगवान ने इतना पतला तुम्हें क्या सोचकर बनाया है! चींटी बोली - ‘‘कुछ अच्छा ही सोचा होगा, मेरे बारे में भगवान ने. तुम अपने शरीर का घमंड मत करो.’’ हाथी बोला- ‘‘अभी तुमने मेरी ताकत नहीं देखी है. अगर मैं अपनी एक टांग धरती पर मार दूं तो धरती हिलने लगेगी.’’ इतना कहकर वह जोर जोर से टांग को धरती पर माने लगा. चींटी ने हाथी को समझाया - ‘‘ऐसा मत करो, नहीं तो गुफा हमारे ऊपर गिर जाएगी.’’ घमंडी हाथी ने चींटी की बात नहीं मानी और जोर जोर से अपनी टांगो को धरती पर मारता रहा. ज़मीन के हिलने से एक बहुत बड़ा पत्थर गुफा के सामने आ गया और गुफा बंद हो गई. चींटी बोली - ‘‘यह क्या किया तुमने? गुफा बंद कर दी. इस पत्थर को हटाओ.’’ हाथी ने पत्थर को हटाने का प्रयास किया लेकिन पत्थर को हटा नहीं पाया. परेशान होकर हाथी चींटी से बोला - ‘‘हम तो यहां फंस गए.’’ चींटी बोली - ‘‘हम नहीं तुम फंस गए. भगवान ने मेरा शरीर इतना छोटा बनाया है कि मैं आसानी से बाहर जा सकती हूं.’’ हाथी ने रोते हुए मदद की गुहार लगाई तो चींटी बाहर जाकर हाथी के साथियों को बुलाकर लाई. हाथी के साथियों ने पत्थर हटा दिया. हाथी ने बाहर आकर चींटी को शुक्रिया कहा. इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि- "ताकत से बड़ी बुध्दि है।"

तीन

लेखिका - श्रीमती लक्ष्मी मधुकर, पोड़ी (लाफा), पाली जिला कोरबा

हाथी ने चींटी को फूंक मारने के लिए जैसे ही अपनी सूंड आगे बढ़ाई, चींटी चालाकी से उसकी नाक के अंदर घुस गई और काटने लगी. हाथी व्याकुल हो उठा और चिल्लाने लगा- ''बाहर निकलो - बाहर निकलो.'' चींटी बोली - ''देख ली छोटी सी चींटी की ताकत. तुम तो बहुत घमंड करते थे. अब क्या हुआ?'' हाथी बोला- ''मुझे माफ कर दो, चींटी बहन. मुझे पता चल गया कि छोटी सी चींटी भी बहुत ताकतवर होती है'' चींटी बाहर निकल आई और दोनों में दोस्ती हो गई.

अगले अंक के लिये अधूरी कहानी -

आलसी किसान

बहुत समय पहले की बात है. एक गांव में एक किसान अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता था. उसकी ज़िंदगी बेहद ख़ुशहाल थी. उसके पास भगवान का दिया सब कुछ था. सुंदर-सुशील पत्नी, होशियार बच्चे, खेत-ज़मीन-पैसे थे. उसकी ज़मीन भी बेहद उपजाऊ थी, जिसमें वो जो चाहे फसल उगा सकता था. लेकिन एक समस्या थी कि वो ख़ुद बहुत ही ज़्यादा आलसी था. कभी काम नहीं करता था. उसकी पत्नी उसे समझा-समझा कर थक गई थी कि अपना काम ख़ुद करो, खेत पर जाकर देखो, लेकिन वो कभी काम नहीं करता था. वो कहता, "मैं कभी काम नहीं करूंगा." उसकी पत्नी उसके अलास्य से बेहद परेशान रहती थी, लेकिन वो चाहकर भी कुछ नहीं कर पाती थी. एक दिन एक साधु किसान के घर आया और किसान ने उसका ख़ूब आदर-सत्कार किया. ख़ुश होकर सम्मानपूर्वक उसकी सेवा की. साधु किसान की सेवा से बेहद प्रसन्न हुआ और ख़ुश होकर साधु ने कहा कि "मैं तुम्हारे

सम्मान व आदर से बेहद ख़ुश हूं, तुम कोई वरदान मांगो.” किसान को तो मुंहमांगी मुराद मिल गई. उसने कहा, “बाबा, कोई ऐसा वरदान दो कि मुझे ख़ुद कभी कोई काम न करना पड़े. आप मुझे कोई ऐसा आदमी दे दो, जो मेरे सारे काम कर दिया करे.”

अब इस अधूरी कहानी को पूरा करके हमें भेज दो. हम अगले अंक में आपकी कहानी प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिए यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें जो कहानियां मिली हैं उन्हें हम प्रकाशित कर रहे हैं -

चुनमुन और सोने का अंडा

लेखिका - पुष्पा शुक्ला

एक दिन सुबह - सुबह सुखिया और उसकी पत्नी रमिया खेत जा रहे थे. अचानक उन्हें बतख की बच्ची की क्वैक - क्वैक कि तेज आवाज सुनाई दी. उन्होंने देखा कि एक बिल्ली ने बतख की बच्ची को पंजे में दबोच रखा था. बतख की बच्ची जोर-जोर से चीख रही थी. उन्हें देखते ही बिल्ली बतख की बच्ची को छोड़कर भाग

गई. बतख की बच्ची बुरी तरह घायल हो गई थी. सुखिया और रमिया को बतख की बच्ची पर दया आ गई. वे उसे घर ले आए, उसके जख्मों पर दवा लगाई और चुगने को दाना दिया.

कुछ दिनों बाद बतख की बच्ची पूरी तरह ठीक हो गई. वह सुखिया और रमिया से बहुत घुल मिल गई. रमिया ने उसका नाम चुनमुन रखा. चुनमुन रमिया के आगे - पीछे घुमती. अब वह उनके घर कि एक सदस्य जैसी हो गई थी. उन्होंने चुनमुन के लिए घर पर ही घासफूस से एक घोंसला बना दिया था. चुनमुन उसमें मजे से रहती थी.

एक रात सुखिया और रमिया आपस में बातें कर रहे थे. सुखिया अपनी पत्नी से बड़े उदास मन से कह रहा था - "बरसात आ गई है. फसल बोने का समय हो रहा है. पिछली बार फसल अच्छी नही हुई. इसके चलते बीज और खाद के लिए भी पैसे नही हैं. समझ नही आ रहा कि क्या करूँ. कहाँ से पैसे लाऊं. क़र्ज़ भी नहीं मिल रहा है." उसकी पत्नी ने उसे धीरज बँधाया और कहा - "आप खाना खा लो सब ठीक हो जायेगा. घर में कुछ पीतल के बर्तन हैं उन्हें कल बाजार में बेचकर बीज और खाद ले आना." चिंता में दोनों बिना खाना खाए ही सो गए. चुनमुन अपने घोसले से उनकी बातें सुन रही थी. उसे बड़ा दुःख हुआ. उसका जी चाह रहा था कि वह उनके लिए कुछ करे.

अगली सुबह चुनमुन जोर - जोर से क्वैक-क्वैक कि आवाज करने लगी. उसकी आवाज सुनकर रमिया और सुखिया घर के बाहर दौड़े आए. चुनमुन के पास एक सोने का अंडा रखा था. वे समझ गए कि चुनमुन ने वह सोने का अंडा देने के लिए ही उन्हें क्वैक - क्वैक करके बुलाया है. उन्हें खुश देखकर चुनमुन भी बहुत खुश हुई.

धैर्य बड़ी चीज

लेखिका कु. कविता कोरी, गड़रियापारा, लाखासर

एक निर्धन किसान को कहीं से एक मुर्गी मिल गई. वह उस मुर्गी को घर ले आया. उसने यह सोचकर कि आज काफ़ी दिन बाद बढ़िया खाने को मिलेगा, मुर्गी को काटने के लिए बड़ा-सा चाकू उठा लिया. जैसे ही वह उस मुर्गी को काटने ले लिए बढ़ा कि मुर्गी बोली, ''मुझ पर दया करो, मुझे मत मारो.'' किसान बोला, ''क्यों न मारूँ? काफ़ी दिन हो गए मुर्गी खाए, मैं तो तुम्हें ज़रूर काटूँगा.'' मुर्गी बोली, 'मुझे काट कर तुम्हें नुकसान ही होगा क्योंकि मैं सोने का एक अंडा रोज़ देती हूँ. मुझे जीवित रखो और रोज़ सोने के एक अंडे के मालिक बन जाओ. इससे तुम्हारी निर्धनता भी दूर हो जाएगी.'' ''हो सकता है तुम झूठ बोल रही हो,'' किसान ने कहा. मुर्गी बोली ''सुबह तक आजमा लो, अगर बात झूठ निकली तो मुझे मार डालना.'' सुबह सचमुच उस मुर्गी ने सोने का अंडा दिया. किसान खुश हो गया. अब तो यह रोज़ का सिलसिला बन गया. कुछ ही दिनों में वह किसान मालामाल हो गया.

एक दिन किसान के मन में लालच ने सिर उठाया. लालच में फँसे इंसान की बुध्दि काम करना बंद कर देती है. किसान ने सोचा कि 'कौन रोज़-रोज़ एक-एक अंडा इकट्ठा करता फिरे. मुर्गी को मार कर एक ही बार में सारे अंडे निकाल लेता हूँ. लालच में उसने मुर्गी का पेट चीरने की सोची और चाकू लेकर आ गया. तभी किसान की पत्नी ने उसे रोका और कहा - ''तनिक धैर्य रखा करो. कभी सुना है मुर्गी के पेट में एक साथ ढेर सारे अण्डे?'' तब किसान को अकल आई. वरना लालच में पड़कर किसान रोज़ मिलने वाले सोने के एक अंडे से भी हाथ धो बैठता.

कथा-सार - "धैर्य का फल सदैव अच्छा ही होता है और अधीरता बने-बनाए काम को भी बिगाड़ देती है. यदि किसान की पत्नी धैर्य नहीं रखती तो किसान रोज़ सोने का एक अंडा पाने से हाथ धो बैठता."

सोने का अंडा

लेखिका - कु. सष्टि मधुकर, पोड़ी लाफा, पाली, जिला कोरबा

एक किसान अपने खेत में हल चला रहा था. उसी समय आसमान में उड़ते हुए बाज के पैर से एक छोटी सी मुर्गी का बच्चा नीचे गिरा और चूं चूं की आवाज करने लगा. आवाज सुनकर किसान उसके पास गया और उसे उठाकर अपने घर ले आया. वह और उसकी पत्नी चूजे देखभाल करने लगे. देखते ही देखते वह चूजे से बड़ी होकर एक मुर्गी बन गई और एक दिन उसने एक सोने का अंडा दिया. उसे देखकर किसान और उसकी पत्नी अचंभित हो गए. किसान उस अंडे को बेचकर अपना जीवन यापन करने लगा. मुर्गी रोज एक अंडा देती थी. अब किसान गरीब नहीं था. उसके पास बहुत से खेत, सुंदर घर और बहुत से जानवर हो गये. वह अमीर बन गया. कुछ दिनों में उसके मन में लालच समा गया. उसने सोचा कि मुर्गी के पेट में बहुत से सोने के अंडे होंगे. सारे अंडे एक साथ निकालकर बहुत अमीर बन जाऊंगा. यह सोच कर किसान और उसकी पत्नी ने मुर्गी को काट डाला. मुर्गी के पेट से कुछ न निकला. देखो किस्मत का खेल - जो रोज एक अंडा मिलता था, वह भी हाथ से गया. दोनों सिर पकड़कर पछताने और रोने लगे.

कहानी से सीख -लालच बुरी बला है.

अगले अंक में कहानी लिखने के लिये हम कुमारी दिलेश्वरी पाल का बनाया चित्र नीचे प्रकाशित कर रहे हैं. इस चित्र पर जल्दी से कहानी लिखकर हमे भेज दो जिसे हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे -

चुटकुले

संकलनकर्ता - कु. सृष्टि मधुकर, पोड़ी लाफा, पाली

अध्यापक कक्षा में छात्रों को चींटी के संबंध में शिक्षाप्रद बातें बता रहे थे.

अध्यापक- अब बताओ कि चींटी से हमें क्या सीख मिलती है?

छात्र- मास्टरजी चीटियां यह बता देती है कि मां ने मिठाई कहां रखी है.

पत्नी- इतने लेट कैसे?

पति- वह क्या हैं, एक आदमी की ₹ 2000 की नोट गुम हो गई थी.

पत्नी -अच्छा तो तुम क्या उसे ढूंढने में मदद कर रहे थे?

पति- नहीं मैं उस नोट पर खड़ा था.

चिंटू आराम से बैठा था.

मिंटू(चिंटू से)- कुछ काम करो.

चिंटू (मिंटू से)- मैं गर्मियों में काम नहीं करता हूं.

मिंटू- और सर्दियों में?

चिंटू -गर्मियां आने का इंतजार करता हूं.

एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से पूछा - क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकते हो?

दूसरे बच्चे ने कहा- हां अगर वह हिंदी तथा अंग्रेजी में लिखी हो तो.

एक तोता एक कार से टकरा गया तो उस कार वाले ने उसे उठाकर पिंजरे में डाल दिया.

दूसरे दिन जब तोते को होश आया, वह बोला - आई ला जेल ! कार वाला मर गया क्या?

छोटा बच्चा अपना रिजल्ट लेकर आया और पिता से बोला- पापा आप बहुत किस्मत वाले हैं.

पिता - कैसे बेटा?

बच्चा - क्योंकि मैं फेल हो गया हूं, आपको मेरे लिए नई किताबें नहीं खरीदनी पड़ेंगी.

खरबूजा जी

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", व्याख्याता पंचायत, घोटिया (डौण्डी)

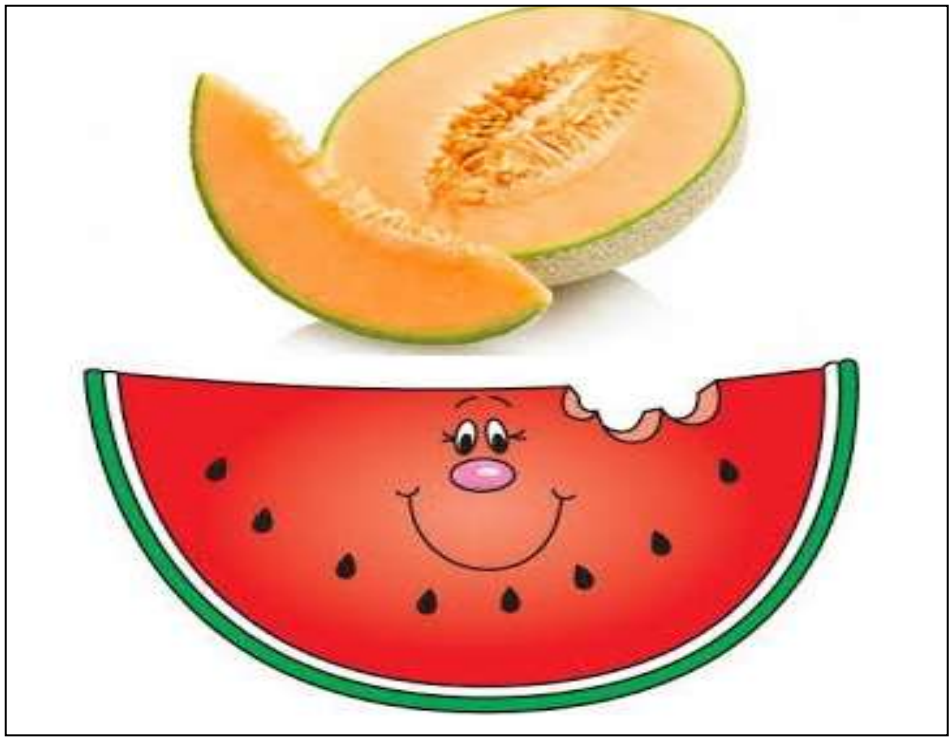

ओ खरबूजा जी !

ओ खरबूजा जी !

मैं मित्र आपका तरबूजा जी !

गरमी के मौसम में आते !

बाजारों में हो इतराते !

गाँव, शहर, कस्बों में दिखते,

रायपुर, बालोद और सरगुजा जी !

एक दिन मैं बाजार गया !

खूब छाँटकर मोल लिया !

खाया मैने तुझको छक कर

करी पेट की पूजा जी !

गोल मटोल और धारीदार !

मीठे मस्त बड़े रसदार !

खुशबू तेरी होती बड़ी अच्छी !

पाये स्वाद न दूजा जी !

चूहा और मुर्गा

लेखक - द्रोण साहू

चूहा बोला चूँ-चूँ-चूँ,

बैठा है तू उकडूँ क्यूं

देख ले मेरे भूरे बाल,

लंबी मूँछें चिकने गाल.

मुर्गा बोला कुकडूं कूँ,

तेरे जैसे अकडूँ क्यूं।

सर पर मेरे कलंगी लाल,

और मेरी मस्तानी चाल,

फालतू बातें पकडूं क्यू,

बेमतलब में झगडूँ क्यूं

बेटी

लेखक - डोमेन कुमार बढ़ई, मानपुर

बेटी हूं मैं बेटी हूं

देश की प्यारी बेटी हूं

सबसे सुंदर देश हो अपना

रोज देखती मैं यह सपना

बक्त न जाने कैसा आया

मेरा फूल सा मन कुम्हलाया

सौ-सौ दुख हैं मैने झेले

मगर मिला ना मुझको न्याय

कभी निर्भया, कभी असिफा

होता रहा सदा अन्याय

अब न सहूंगी मैं अन्याय

लड़कर लूंगी सच्चा न्याय

बेटी हूं मैं बेटी

देश की प्यारी बेटी हूं

ज्ञान विज्ञान

संकलनकर्ता - दिलकेश मधुकर, नवापारा कर्रा , पाली

1. गुब्बारों को भरने में हीलियम गैस का प्रयोग होता है.
2. दियासलाई में लाल फास्फोरस का प्रयोग होता है.
3. पालीथीन बनाने में एथिलीन प्रयोग होता है.
4. घर में सफेदी करने के लिए प्रयुक्त योगिक कैल्शियम ऑक्साइड है.
5. चूने के पानी को कार्बन डाइऑक्साइड दूधिया कर देती है.
6. वायुमंडल में ओजोन गैस की परत को क्लोरोफ्लोरोकार्बन प्रभावित करता है.
7. पेयजल को शुध्द करने में क्लोरीन का उपयोग होता है.
8. मूत्र का पीला रंग यूरोक्रोम की उपस्थिति के कारण होता है.
9. हाइड्रोजन सल्फाइड से सड़े अंडे जैसी गंध आती है.
10. ओजोन गैस चांदी एवं पारा को प्रभावित करती है.
11. ओजोन गैस से सड़ी हुई मछली जैसी गंध आती है.
12. बर्तनों में कलई करने में अमोनिया क्लोराइड प्रयोग होता है.
13. फूलों का रंग क्लोरीन गैस उड़ा देती है.
14. कृत्रिम वर्षा के लिए सिल्वर आयोडाइड का प्रयोग किया जाता है.
15. आतिशबाजी में हरा रंग बेरियम, लाल रंग स्ट्रांसियम, पीला रंग सोडियम, नीला रंग तांबा के कारण उत्पन्न होता है.
16. लाफिंग गैस नाइट्रस ऑक्साइड को कहते हैं.
17. पौधों में हरा रंग क्लोरोफिल के कारण होता है.
18. रक्त का लाल रंग हीमोग्लोबिन के कारण होता है.
19. काकरोच (तिलचट्टे) के खून का रंग सफेद होता है.
20. फलों और उनके रस को सुरक्षित रखने में सोडियम बेंजोएट प्रयोग किया जाता है.

कबाड़ से करें कमाल - आओ पायदान बनाएं

लेखक - दिलकेश मधुकर

क्या चाहिए - पुरानी साड़ी या कपड़े / पॉलिथीन / पुराने स्वेटर या रेशमी धागा, कैंची, दो सलाई.

कैसे बनाएं - पुरानी साड़ी या कपड़े को कैंची की सहायता से पतला - पतला काट लें. फिर उसे रस्सी के जैसा लंबा जोड़कर एक गोला बना लें. फिर सलाई की मदद से बुनते हुए विभिन्न डिजाइन की पायदान या कारपेट बना सकते हैं. इसी तरह पुराने स्वेटर के धागों को अलग कर के भी बना सकते हैं. पॉलिथीन से भी सलाई की मदद से विभिन्न आकृति की वस्तुएं बना सकते हैं जैसे - पायदान, कारपेट, टोकरी, थैली आदि.

इससे होने वाले फायदा - समय का सदुपयोग, कबाड़ की वस्तुओं का उपयोग, कलात्मक शैली का विकास, स्वरोज़गार.

I love Colours

Author - Suraj Kumar Pal, Class 5th

I love Colours, Yes I do.

I love Colours, Yes I do.

Red and Orange, Yellow and Blue.

I love Colours, Dark and Bright.

I love Colours, Dark and Bright.

Green and Purple, Black and White.

पहेलियां

1. ऐसी कौन सी चीज है जो सिर्फ बोलने से ही टूट जाती है ?
   उत्तर - खामोशी

2. रात में रोई, दिन में सुकून से सोई ?
   उत्तर - मोमबत्ती

3. ऐसी कौन सी चीज है जिसे हम आधा खा लेते हैं लेकिन फिर भी वह पूरी ही रहती है ?
   उत्तर - पूरी

4. वह क्या है जिसे आप किसी को देने के बाद भी रख सकते हैं ?
   उत्तर - वचन

5. वह क्या है जो पूरा कमरा भर देता है मगर जगह बिलकुल भी नहीं घेरता है ?
   उत्तर - प्रकाश

6. गोलू और मोलू दोनों दोस्त हैं. एक दिन गोलू की मुर्गी ने मोलू के घर जाकर अंडे दिए तो बताओ अब अंडे किसके हुए गोलू के या मोलू के ?
   उत्तर - मुर्गी के

कौन सा स्विच किस बल्ब का है

एक कमरे के भीतर तीन बल्ब हैं जिनके स्विच कमरे के बाहर हैं. आपको केवल एक बार ही कमरे के अंदर जाने की अनुमति है. आप कैसे पता करेंगे कि कौन सा स्विच किस बल्ब का है?

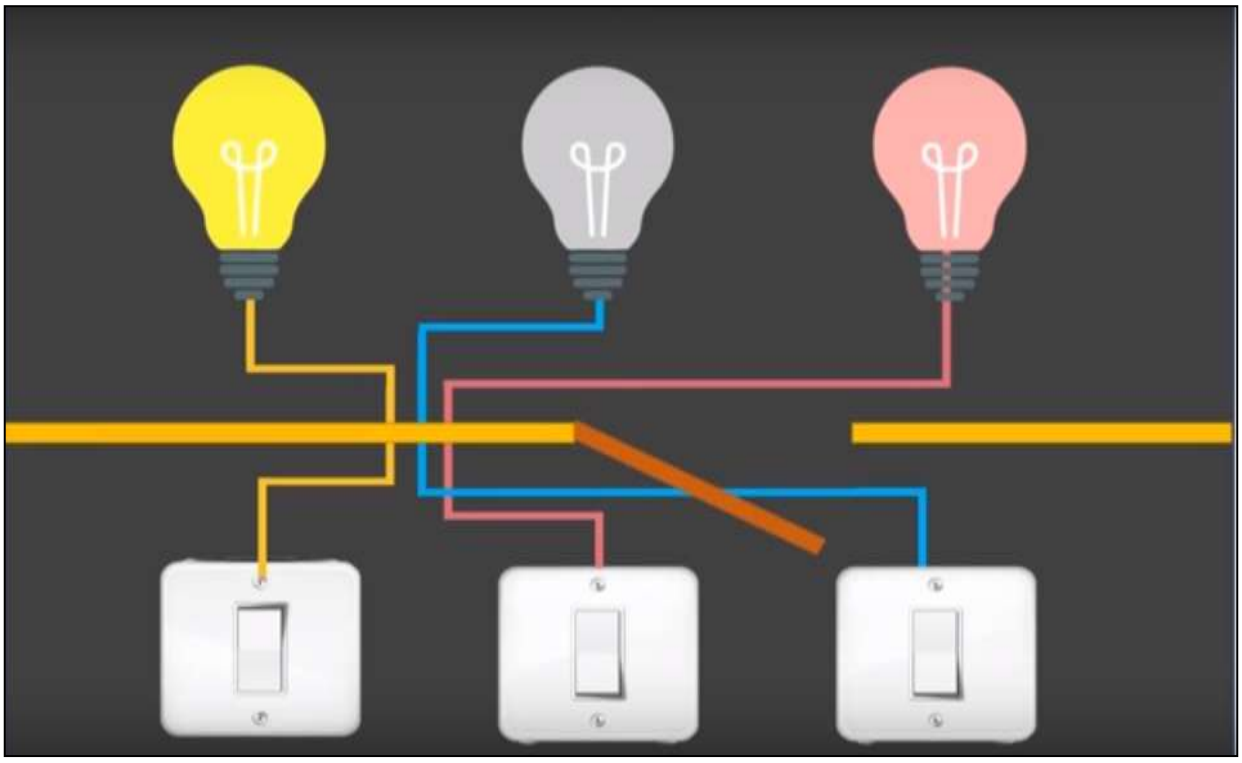

उत्तर - पहले एक स्विच आन करिये और कुछ देर के बाद उसे बंद कर दीजिये. इसके बाद दूसरा स्विच आन करके कमरे के अंदर चले जाइये. जो बल्ब जल रहा है उसका स्विच वह है जो अभी आन है. अब बचे हुए दोनो बल्ब छूकर देखें. जो बल्ब गरम है उसका स्विच वह है जो आपने आन करके आफ किया था. तीसरा स्विच बचे हुए तीसरे बल्ब का है.

<u>समान्य ज्ञान - बस्तर का चित्रकोट जलप्रपात</u>

छत्तीसगढ़ में बस्तर अंचल में जगदलपुर का 'चित्रकोट जलप्रपात' बड़ा मनमोहक है. यह इंद्रावती नदी के पहाड़ी से नीचे गिरने से बना है. इसे भारत का नियाग्रा फाल भी कहा जाता है. लगभग पौन किलोमीटर चौड़ा और 90 फीट ऊंचा यह जलप्रपात देश भर में सबसे चौड़ा है. अलग-अलग मौकों पर इस जलप्रपात से कम से कम तीन और अधिकतम सात धाराएं गिरती हैं. आकार में यह घोड़े की नाल के समान है. इस जल प्रपात के आस पास घने वन हैं. पर्यटन विभाग ने इस स्थान पर रोशनी की है जिससे रात के समय प्रपात का पानी बहुत सुंदर नज़र आता है. वर्षा के समय इसकी सुंदरता और बढ़ जाती है.

वर्ग पहेली

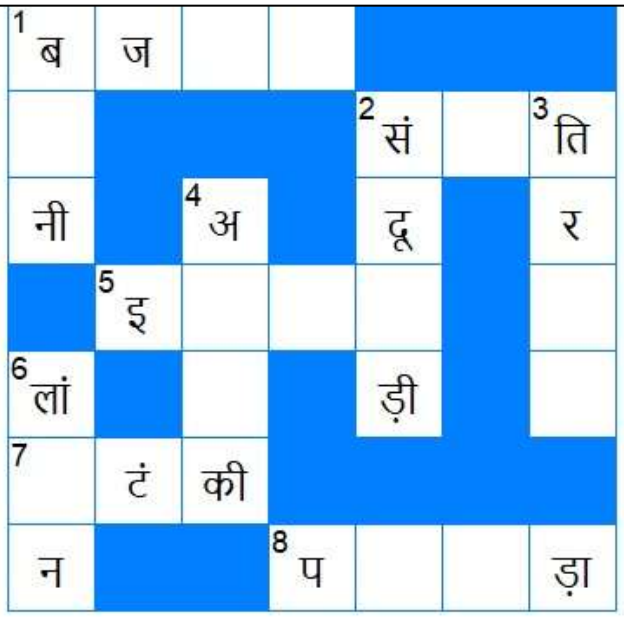

बाएँ से दाएँ

1. वह मज़दूरी जो किसी से बाजा बजवाने के बदले में दी जाती है.
2. आवश्यक शारीरिक क्रियाओं को बनाए रखने के लिए उत्तरदायी संभावित क्षमता; (रिज़र्व).
5. जायदाद; मिलकियत
7. छटाँक भर तौल का एक बाट
8. महीने का आधा भाग; पंद्रह दिन का समय

ऊपर से नीचे

1. अग्रिम (एडवांस), झाड़ू
2. छोटा संदूक
3. तिरहुत में गाया जाने वाला एक तरह का गीत
4. अमरीका से संबंधित
6. आरोप, दोष, कलंक

हल